कारण इसको वैशाख कहा जाता है। इस महीने में धन प्राप्ति और पुण्य प्राप्ति के तमाम अवसर आते हैं। मुख्य रूप से इस महीने में भगवान विष्णु, परशुराम और देवी की उपासना की जाती है। वर्ष में केवल एक बार श्री बांकेबिहारी जी के चरण दर्शन भी इसी महीने में होते हैं। इस महीने में गंगा या सरोवर स्नान का विशेष महत्व है। आम तौर पर इसी समय से लोक जीवन में मंगल कार्य शुरू होते हैं।

हिन्दू धर्म के अनेक ग्रंथों और पुराणों में जिनमें स्कंदपुराण, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण आदि प्रमुख है, वैशाख माह के महत्व के बारे में विस्तार से लिखा गया है। स्कंद पुराण में देवर्षि नारद ने वैशाख माह का महत्व बताया कि विद्याओं में वेद श्रेष्ठ है, मंत्रों में प्रणव, वृक्षों में कल्पवृक्ष, धेनुओं में कामधेनु, देवताओं में विष्णु, वर्णों में ब्राह्मण, वस्तुओं में प्राण, नदियों में गंगा, तेजों में सूर्य, अस्त्र-शस्त्रों में चक्र, धातुओं में स्वर्ण, वैष्णवों में शिव तथा रत्नों में कौस्तुभमणि श्रेष्ठ है, उसी तरह महीनों में वैशाख मास सर्वोत्तम है। देवर्षि नारद ने इस माह की श्रेष्ठता के साथ ही वैशाख माह के धर्म और आचरण का महत्व भी बताया। उनके अनुसार इस माह में ग्रीष्म ऋतु होने से जलदान ही श्रेष्ठ है। इस माह में जलदान करने वाला, प्याऊ लगवाने वाला, कुएं और तालाब बनवाने वाला असीम पुण्य पाता है। देवर्षि नारद द्वारा बताए गए वैशाख माह के महत्व और आचरण का संदेश यही है कि मानव ऐसे आचरण करें जिससे एक मानव दूसरे मानव से भावनाओं और संवेदनाओं से जुड़ा रहे। चूंकि यह माह गर्मी के मौसम का होता है। जल की कमी होती है। मानव के साथ ही अमूक प्राणी और पक्षियों के जीवन के लिए भी जल बहुत आवश्यक होता है। अत: जल का मूल्य समझकर जल का अपव्यय न करते हुए जल का दान करना, पक्षियों के लिए जलपात्र रखना चींटियों के लिए आटे-गुड़ से बनी गोलियां और मछलियों के लिए दाना देना स्वयं के मन को सुकून देने के साथ ही अहं भाव तिरोहित कर दूसरों को भी सुख और तृप्ति देता है। इससे धर्म के साथ मानवीय भावनाओं का भी पोषण होता है। अमूक जीवों को जल और भोजन देना मानव को प्रकृति से भी जोड़ता है।

वैशाख का महीना हमें सरलता और परोपकार की भावना से जीना सीखाता है। पुराणों में वैशाख को पवित्र मास बताया गया है। हमारे मनीषियों और ऋषि-मुनियों के द्वारा वैशाख माह में होने वाले प्रकृति के बदलावों को समझकर अपने अनुभव और ज्ञान से इस माह के व्रत, पर्व, त्योहार की रचना की और इनके साथ ही पालन के लिए नियम-संयम को लोक व्यवहार से जोड़ा गया। जिनमें धार्मिक कर्म, स्नान और दान का महत्व भी बताया गया है। यह सारे विधान मानव को सादगी से रहने और हर प्राणी मात्र के प्रति संवेदना रखने की प्रेरणा देते हैं।

हिन्दू धर्म के अनेक ग्रंथों और पुराणों में जिनमें स्कंदपुराण, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण आदि प्रमुख है, वैशाख माह के महत्व के बारे में विस्तार से लिखा गया है। स्कंद पुराण में देवर्षि नारद ने वैशाख माह का महत्व बताया कि विद्याओं में वेद श्रेष्ठ है, मंत्रों में प्रणव, वृक्षों में कल्पवृक्ष, धेनुओं में कामधेनु, देवताओं में विष्णु, वर्णों में ब्राह्मण, वस्तुओं में प्राण, नदियों में गंगा, तेजों में सूर्य, अस्त्र-शस्त्रों में चक्र, धातुओं में स्वर्ण, वैष्णवों में शिव तथा रत्नों में कौस्तुभमणि श्रेष्ठ है, उसी तरह महीनों में वैशाख मास सर्वोत्तम है।

वैशाख मास की परंपराएं मानवीय संवदेनाओं से भरी हुई हैं, जिनसे लोगों में मानवता की भावना पोषित होती रही है। हर धर्म में भूखे को भोजन देना और प्यासे जीव को पानी पिलाकर तृप्त करना धर्म पालन में श्रेष्ठ कर्तव्य माना जाता है। सनातन धर्म में वैशाख माह में भी ग्रीष्म ऋतु की गर्माहट में प्राणीमात्र को शीतलता देने के लिए लोक व्यवहार में इन दो बातों के साथ ही अन्य परंपराएं भी प्रचलित है। जिनमें जल का दान, प्यासे को पानी पिलाने के लिए प्याऊ लगाना, पंखा दान जो ठंडी हवा देता है, कड़ी धूप से बचने के लिए छायादार स्थान बनाना, धूप से तपती जमीन से पैरों को बचाने के लिए पदयात्रियों को जूते-चप्पल या पादुका देना तथा भोजन कराना आदि प्रमुख हैं।

इस प्रकार वैशाख माह धार्मिक दृष्टि से जहां पुण्य प्राप्ति का काल है, वहीं व्यावहारिक दृष्टि से यह माह शरीर के ताप के साथ ही मन के संताप का शमन करता है।